

मणिपुर के नुपी लाल (नारी-संघर्ष) में हिजम इराबत का योगदान
डॉ. येंखोम हेमोलता देवी

Link : <https://shorturl.at/gvHO3>



सारसंक्षेप : मणिपुर सन् 1891 के पहले राजा द्वारा शासित एक स्वतंत्र देश था लेकिन खोजजोम युद्ध में भीषण हार का सामना करने के बाद ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया था। फिर, सन् 1904 ई. में मणिपुरी महिलाओं ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जाकर प्रथम बार आवाज उठायी थी और उस संघर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य का डटकर सामना किया था। अन्त में विवश होकर सरकार को अपना आदेश वापस लेना ही पड़ा था। इस घटना को मणिपुर के इतिहास में प्रथम नारी संघर्ष के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रथम नारी संघर्ष के चहल-पहल के बीच केवल आठ वर्षीय इराबत ने उस भयावह माहौल में बिना किसी डर के डटे रहकर भाग लिया था। इतनी-सी कम उम्र में ही मातृभूमि के प्रति पनप रहे अपने देशप्रेम की भावना को उन्होंने दिखाया। द्वितीय नुपी लाल का संबंध 12 दिसम्बर को टेलिग्राफ ऑफिस में घटित उस घटना विशेष से है जिसमें मणिपुरी नारियों ने दुबारा तत्कालीन सरकारी अधिकारियों के खिलाफ आवाज उठायी थी। इस संघर्ष में मणिपुरी जनता, विशेषकर नारियों ने अंग्रेजों के क्रूर नीति व अत्याचार के कारण पनप रहे असन्तोष और क्रोध की लहर को डटे रहकर वीरांगना स्त्री की भाँति सामना किया। यह संघर्ष इराबत के कई समय के प्रयत्न के बाद का उपज था। इराबत के जीवन काल में घटित घटनाक्रम में द्वितीय नारी संघर्ष ही एक ऐसी घटना है जो मणिपुरी समाज में हो रहे अत्याचार, गंदगी से भरे सतह जिसमें पैर रखने के लिए जगह शेष न था उन सभी को जिस तरह बाढ़ आने पर सब गंदगी अपने में समेटकर बहा ले जाती हैं वैसे ही समाज में एक नया परिवर्तन लाते हुए भविष्य में हमारे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में एक नया परिवर्तन लाने में नारियों के दायित्वों को याद दिलाती है।

सूचक शब्द : मणिपुर, नारी संघर्ष, ब्रिटिश, महिलाओं, दिसम्बर, नुपी लाल, स्वाधीनता आन्दोलन, सरकार, हिजम इराबत, टेलिग्राफ ऑफिस।

मणिपुर सन् 1891 के पहले राजा द्वारा शासित एक स्वतंत्र देश था लेकिन खोजजोम युद्ध में भीषण हार का सामना करने के बाद ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया था। जैसाकि अक्सर युद्ध में जीत हासिल करने के बाद अपनायी जाने वाली दमन नीति के चलते अंग्रेजों के अत्याचार से मणिपुर निवासी जन मानस के जीवन में उथल-पुथल मच गया था। अंग्रेजों द्वारा इम्फाल एरिया के कई जगहों को हथियाते हुए वहाँ बसे लोगों को भगाया गया था और इसी दौरान इराबत के माता-पिता को भी अपने जन्मस्थान याइस्कूल पुलिसलेन मणिपुर राइफलस् कॉलोनी छोड़कर शरणार्थी बनकर अपने एक संबंधी प्रसिद्ध मृदंग गुरु श्री हिजम लोकनाथ सिंह के यहाँ नम्बूल मपाल पिशुमथोड ओइनाम लैकाइ में आना पड़ा था। इराबत के माता-पिता का नाम श्रीमति चोडथाम चनु थम्बालडाडबी देवी और श्री इबुंडोहल सिंह था। शरणार्थी काल के इस विषम, दुःखमय, कष्ट भरे कठोर क्षण में 30 सितम्बर, 1896 को जन नेता हिजम इराबत सिंह का जन्म हुआ।¹ जीविकोपार्जन के लिए उनके पिता को आवा (वर्तमान बर्मा) जाना पड़ा था लेकिन दुर्भाग्यवश वहाँ से वापस लौटने के कुछ ही दिन बाद परलोक सिधार गए। फिर उनकी माँ ने अपने बेटे का पालन-पोषण करने के लिए लोगों के घर-घर जाकर धान कुटना, बर्तन माँजना आदि कार्य किए। उसके बाद इराबत की बुआ श्रीमती हिजम निडोल सौगाईजम ओडबी इबेतोन देवी ने माँ-बेटे को अपने साथ ले लिया। लेकिन दुर्भाग्य ने उनका पीछा नहीं छोड़ा, वहाँ भी इराबत की माँ कुछ ही दिन बाद स्वर्गवास हो जाती है। उनका फूफा श्री सौगाईजम इबोचौ उस समय मणिपुर स्टेट के दरबारी सदस्य के रूप में कार्यरत था। इस तरह इराबत को बचपन में कठिन व विषम परिस्थितियों को झेलने के साथ-ही-साथ माँ-बाप की छाया से भी वंचित होना पड़ा था।

मणिपुर के प्रथम नुपी लाल अर्थात् नारी संघर्ष सन् 1904 ई. में घटित हुआ था।² यह घटना ब्रिटिश साम्राज्य में लीन होने के बाद ठीक 13 वर्ष के शुरूआती दौर में हुआ था। ब्रिटिश द्वारा मणिपुर को हथियाने के बाद यहाँ के जनता को अनेक कष्ट, दुःख व कठोर अत्याचारों का सामना करना पड़ा था और उसी बीच अचानक साहब के बँगले में आग लग गया था। हालाँकि यह आग असावधानी की ओर तो इशारा करता है लेकिन ब्रिटिश साहबों को इस घटना से संबंधित कोई सुराख न मिलने के कारण वे इसका इलज़ाम इम्फाल एरिया में बसे लोगों को लगाता है। यही नहीं, इस दुर्घटना को यहाँ के लोगों द्वारा किए गये षडयंत्र का एक रूप मानते हुए यहाँ के जनता को दण्ड स्वरूप बँगले की चीजों का हर्जाना भरवाने का आदेश निकाला जाता है। साथ ही यह हुक्म भी जारी किया कि नये बँगले बनाने में जितने भी सामग्री लगने वाली हैं उन सामग्रियों की भरपाई हेतु प्रत्येक पुरुष अपने घर से बाँस, इ (एक प्रकार का घास), औज़ार आदि लेकर आए और साथ ही वे स्वयं निर्माण कार्य भी करें। इस आदेश का पालन करते हुए विवशतापूर्वक पुरुष लोग बँगले के निर्माण कार्य में जुट गये थे तभी मणिपुरी महिलाओं द्वारा इस आदेश का प्रतिरोध प्रदर्शन करते हुए निर्माण कार्य के लिए एकत्रित सारी सामग्रियों को नम्बुल नदी में बहा दिया गया था। इसी के साथ यह मांग करती हुई आवाज़ भी उठायी गई कि सही अपराधी को पकड़कर सजा दें।

इसी तरह मणिपुरी महिलाओं ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जाकर प्रथम बार संघर्ष करते हुए डटकर उनका सामना किया और अन्त में विवश होकर सरकार को अपना आदेश वापस लेना ही पड़ा था। इस घटना को मणिपुर के इतिहास में प्रथम नारी संघर्ष के नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्रथम नारी संघर्ष के चहल-पहल के बीच केवल आठ वर्षीय इराबत ने भी खुद (मैंने पुरुषों द्वारा लुंगी की तरह पहने जाने वाला वस्त्र) और शर्ट पहनकर उस भयावह माहौल में बिना किसी डर के डटे रहकर भाग लिया था।³ उनके इस मासूम चहरे के पीछे छिपे विप्लवी को देखकर उस दिन उसे ढूँढने निकले व्यक्ति भी अचम्भित हो गया था। इतनी-सी कम उम्र में ही अपनी मातृभूमि के प्रति पनप रहे देशप्रेम की भावना को हम देख सकते हैं।

द्वितीय नुपी लाल अर्थात् नारी-संघर्ष 12 दिसम्बर 1939 ई. से शुरू हुआ था।⁴ यह नारी-संघर्ष तत्कालीन मणिपुर सरकार के विरुद्ध में मणिपुर की महिलाओं द्वारा उठाया गया बहुत बड़ा कठिन संघर्ष था जो भारतवर्ष में चर्चित है। यह महिलाओं द्वारा चावल के संबंध में आरम्भ किया गया एक मुद्दा है। इस मुद्दे का संबंध वर्ष 1939-40 के मणिपुर स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट से है जिसके अनुसार उस वर्ष असमय खूब बारिश एवं ओले गिरने के कारण खेती-बाड़ी में भारी नुकसान का सामना ही नहीं हुआ बल्कि अन्य फसलें भी तहस-नहस हो गई थी। धान का उत्पादन बहुत ही कम होने के कारण मणिपुरी जनता सिर पर हाथ रखती हुई ऐसी बेबसी, लाचारी व हाहाकार के माहौल को झेल रही थीं। तभी ऐसी विषम स्थिति में जनता के पेट को जानबूझकर लात मारते हुए अधिक लाभ कमाने के लालच में ठेकेदार उस साल होने वाले धान के उत्पादन में आने वाली कमी को भाप लेते हुए पहले से ही जनता से धान एकत्रित करके अपने गोदामों में रख चुके थे ताकि ऐसी स्थिति में भी वे अपने मुनाफे को कायम रखते हुए चावल को मणिपुर के बाहर भेजा जा सके। फिर, बाजार में चावल की कमी के कारण दामों में बढ़ोतरी ही नहीं हुई बल्कि खरीदने के लिए भी दुर्लभ होने लगा। इस तरह उस दौरान जनता ने चावल की महँगाई के यथार्थ कष्ट को झेला। इसी बीच लोगों ने मिल में धान पीसना और बाहर भेजने के कार्य पर शिकायत किया और फिर, सितम्बर 13 को स्टेट दरबार में यह मुद्दा उठाया गया कि जबतक सरकार की ओर से कोई आदेश जारी न किया जाए तब तक बाहर चावल भेजने पर पाबंदी लगाया जाए पर वह सफल नहीं हुआ।⁵

फिर, दिसम्बर के दूसरे सप्ताह तक आते-आते चावल को बाहर भेजने के इस रोक-थाम की गतिविधि में उत्तेजना शुरू हुई। ग्यारह दिसम्बर को दो हजार महिलाओं ने स्टेट दरबार में जाकर तत्काल चावल भेजने के इस कार्य को बंद करने के लिए निवेदन किया। लेकिन उस दिन दरबारी अध्यक्ष मौजूद न होने के कारण फिर अगले दिन आने के लिए कहा गया। तत्पश्चात् महिलाओं ने बाहर भेजने के लिए धान-चावल से लदी हुई गाड़ियों को रोकना शुरू किया। फिर, 12 दिसम्बर के सुबह दस बजे के आसपास लगभग चार हजार महिलाएँ मणिपुर स्टेट दरबार में आ पहुँची और अध्यक्ष (टी.ए.शार्प)⁶ को बाहर चावल भेजने एवं चावल के मिलों पर

पाबंदी लगाने के लिए शिकायत की। लेकिन अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि अभी महाराज तीर्थ-यात्रा पर नवद्वीप गया हुआ है और बिना उसके स्वीकृति के कुछ भी नहीं हो सकता यहाँ तक की चावल भोजना, एजेण्ट की नियुक्ति और मिल का परमिट भी उनके आदेशानुसार हो रहा है। फिर, उन महिलाओं द्वारा अपनी बात पर लगातार जोर देने पर दरबारी अध्यक्ष कहता है कि वह तो बस महाराज को आज तार करके इसकी सूचना दे सकता है। तब महिलाओं ने निश्चय किया कि सारी सूचनाओं को जब तक महाराज को तार करके नहीं भेजा जाएगा और साथ ही महाराज का कोई निश्चित आदेश नहीं मिलेगा तब तक वे वहीं ठहरेंगी अर्थात् जगह से कतई नहीं हटेंगी साथ ही दरबारी अध्यक्ष को भी जाने नहीं देंगे। इसी दौरान महिलाओं ने दरबारी अध्यक्ष के साथ उनके रक्षक चौथी असम राइफल्स का कमाण्डेंट मेजर बुलफिल्ड एवं सिविल सर्जन मेजर कम्मिन्स दोनों को भी घेर कर रखा था।⁷ इस पर सरकारी अधिकारी और महिलाओं के बीच कहा-सूनी हुई। परिणामस्वरूप ब्रिटिश कमाण्डेंट मिस्टर बुलफिल्ड के कमान के तहत बहुत से सिपाही अपने हथियारों के साथ पूरी तैयारी करके जैसे किसी भीषण युद्ध का सामना करने के लिए निकले हो, उन निहत्थे महिलाओं के सामने आ पहुँचे।⁸ फिर, डबल बेङ्गुन की आवाज के साथ ही सिपाहियों ने महिलाओं पर लाठी चार्ज एवं संगीनों से हमला शुरू किया। निःशस्त्र एवं शांतिपूर्वक पेट के भूख की माँग कर रही उन महिलाओं पर तनिक भी दया न दिखाते हुए क्रूरतापूर्वक पीटना यहाँ तक कि उनके जूता बूट से मसला भी गया। इस भयंकर आक्रमण से घटनास्थल पर यानी टेलिग्राफ ऑफिस के प्रांगण में इस प्रदेश की महिलाओं को लहलुहान किया गया और इसमें 25 महिलाएँ तो बुरी तरह घायल हो गई थीं। ऐसी भयंकर स्थिति में भी साहस के साथ खड़ी होकर नेतृत्व करने वाली महिलाओं में श्रीमती तोड़ब्रम सबी देवी, रजनी, कुमारी, लैबाकलै एवं सनातोम्बी आदि हैं। उस दौर के मणिपुर पुलिस इन्सपेक्टर खोमद्राम धनचन्द्र ने सबी की छाती पर लात मारा और जब वह गिर गई तब भी अपने जूते से बार-बार लात मारा।⁹ इसी प्रकार द्वितीय नुपी लाल का संबंध 12 दिसम्बर को टेलिग्राफ ऑफिस में घटित इस घटना विशेष से है। इस संघर्ष में मणिपुरी जनता, विशेषकर नारियों ने अंग्रेजों के क्रूर नीति व अत्याचार के कारण पनप रहे असन्तोष और क्रोध की लहर को डटे रहकर वीरांगना स्त्री की भाँति सामना किया। इस प्रकार 12 दिसम्बर, 1939 को मणिपुरी महिलाओं ने सामाजिक, आर्थिक तथा मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए पुनः अग्र पंक्ति में आकर निडर होकर सामना किया। उनकी इस बलिदान को याद करते हुए आज भी राज्य स्तर पर हर साल 12 दिसम्बर को 'नुपी लाल' दिवस मनाया जाता है।

इस द्वितीय नारी संघर्ष के शुरुआती दौर में इराबत मणिपुर के बाहर कछाड़ में एक बड़े सभा में शामिल होने के लिए गया हुआ था। हालाँकि यह संघर्ष उनके कई समय के प्रयत्न के बाद का उपज था। मणिपुर स्टेट दरबार अर्थात् 'सरकार' ने सोचा था कि बाहर चावल भेजने पर पाबंदी का आदेश जारी किए जाने पर यह नारी संघर्ष अपने आप शांत हो जाएगा परंतु इसके विपरीत यह संघर्ष दिन-ब-दिन गंभीर रूप धारण करते हुए चले गए। फिर, स्त्रियों व महासभाओं की तरफ से इस संघर्ष का नेतृत्व करने के लिए इराबत को टेलिग्राम भेजकर कछाड़ से जल्दी वापस बुलाया गया। फिर, वर्किड कमेटी ने सभा का आयोजन किया और उनके मेम्बरों के बीच मतभेद उत्पन्न होने के कारण महासभा के वर्किड कमेटी में अल्पमत वाले सदस्यों का एक बैठक इराबत के घर में हुआ था। उसी बैठक में इराबत ने भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन से लोगों को अवगत कराते हुए यह कहा कि हमें भी इस मौके का फायदा उठाना चाहिए। उभरते स्थिति को परखते हुए तुरंत एक पब्लिक बैठक कराया गया जिसमें उन्होंने नारी संघर्ष का प्रोत्साहन करते हुए एक लंबा भाषण भी दिया था। इस सभा में लोगों ने एकमत होकर नारी संघर्ष का निर्देशन करने के लिए इराबत की अध्यक्षता में प्रजा सम्मेलनी नामक एक विप्लवी दल की स्थापना किया। उसके बाद महिला सम्मेलनी की स्थापना करते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लगातार संघर्ष करते गये। इराबत के नेतृत्व में उस समय मणिपुर में स्थित 18 मिल को आन्दोलन के फलस्वरूप जड़ से काटा गया, बाहर चावल भोजना बंद किया गया और इस कार्य में जनता विजयी हुई।¹⁰ इस नारी संघर्ष को काबू में लाने के लिए तत्कालीन सरकार ने सीआरपीसी धारा 144 जारी किया और लोगों के जमघट पर पाबंदी का आदेश निकाला। फिर भी, इसका कोई असर दिखाई न देने पर अंत में यह दृढ़ निश्चय किया कि इस नारी संघर्ष को दबाने का एकमात्र रास्ता इराबत को पकड़ना ही है। फिर इराबत को सन् 1940 में अंग्रेजों के खिलाफ एक पब्लिक बैठक

में भाषण देने के जुल्म में हिरासत में लिया गया।¹¹

इसी तरह हम देख सकते हैं कि हिजम इराबत का जीवन विषम परिस्थितियों से होकर गुजरा है। बचपन से ही उनके स्वभाव में विप्लव की झलक दिखाई देती है तभी तो अपनी मातृभूमि के दुश्मनों का प्रतिरोध प्रदर्शन करते हुए एक पत्थर ही सही उठाकर फेंकने का हिम्मत रखता है। इराबत ने नुपौलाल को साकार रूप प्रदान करने में अहम भूमिका निभायी है। इराबत के जीवन काल में घटित घटनाक्रम में द्वितीय नारी संघर्ष ही एक ऐसी घटना है जो मणिपुरी समाज में हो रहे अत्याचार, गंदगी से भरे सतह जिसमें पैर रखने के लिए जगह शेष न था उन सभी को जिस तरह बाढ़ आने पर सब गंदगी अपने में समेटकर बहा ले जाती हैं वैसे ही समाज में एक नया परिवर्तन लाते हुए भविष्य में हमारे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में एक नया परिवर्तन लाने में नारियों के दायित्वों को याद दिलाती है। इराबत ने नारी संघर्ष के इस इतिहास को सदैव लोगों के दिलों में बरकरार रखने का संदेश दिया है। अतः इस संबंध में 'इमागी पूजा' (माँ की पूजा) नामक उनकी कविता से निम्न पंक्ति देख सकते हैं¹² -

डसि अहिड लेल्ले,

नुमिट् अमा चट्ख्रे,

शम पुनशिल्लु देवी

इफा फारिबदो।

दिसेम्बर 12 अमा हौख्रे,

दिसेम्बर 12 अमा लाक्ले,

काउरब्रा?

थाजब्रा शम पुनगनि हायबा?

निडब्रा नुमिट् असि लाक्कनि हायबा?

(अर्थात् आज रात बीत गई, एक दिन चला गया, बाल बाँधो देवी जो बिखरा हुआ है। एक 12 दिसम्बर चला गया, एक 12 दिसम्बर आ गया, भूल गए हो क्या? क्या विश्वास था बाल बाँध पाएँगे? क्या कामना किया था इस दिन के आने का?)

सन्दर्भ :

1. सोयाम छत्रधारि सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काडबम लैकाइ, इम्फाल 795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण 1972, पृ. 2
2. वही, पृ. 3
3. वही, पृ. 4
4. उपरोक्त वही, पृ. 53
5. लाइगोन इबोयाइमा, इराबत: मीट्येड अमा, एपोल्लो लाइगोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोडशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल 795003 (मणिपुर), प्रथम संस्करण सितम्बर 29, 2008, पृ. 66
6. वही, पृ. 67
7. उपरोक्त वही

8. सोयाम छत्रधारि सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काडबम लैकाइ, इम्फाल 795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण 1972, पृ. 54
9. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबत: मीट्येड अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोडशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल 795003 (मणिपुर), प्रथम संस्करण सितम्बर 29, 2008, पृ. 67
10. मोइराडथेम राजेन्द्र सिंह, अनौबा मणिपुरगी लमयानबा अहुम, मणिपुर साहित्य समिति, थौबाल, मणिपुर, प्रथम संस्करण अक्तूबर 1, 2006, पृ. 10
11. सोयाम छत्रधारि सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काडबम लैकाइ, इम्फाल 795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण 1972, पृ. 56
12. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबत: मीट्येड अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोडशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल 795003 (मणिपुर), प्रथम संस्करण सितम्बर 29, 2008, पृ. 72

लेखक परिचय : डॉ. येंखोम हेमोलता देवी, इम्फाल, मणिपुर